रियाज़ का रहस्य

गोपाल मिड्ढा

जब मैं करीब दस वर्ष का था तब मैंने ज़ाकिर हुसैन का एक टीवी इंटरव्यू देखा था। उस इंटरव्यू में उन्होंने एक खूबसूरत शब्द का इस्तेमाल किया था 'रियाज़'। उनसे पूछा गया था कि तबला बजाने में उन्होंने इतनी महारत कैसे हासिल की। उन्होंने मुस्कुराते हुए बताया कि वे और उनके उस्ताद अल्ला रक्खा रोज़ घण्टों रियाज़ करते हैं। मुझे अचरज हुआ कि विश्व के सबसे माहिर तबला वादक बनने के बाद भी उनका रियाज़ रुका नहीं। काश हम शिक्षा में भी रियाज़ या अभ्यास को इतना ही महत्व देते।

रियाज़ या अभ्यास का सिर्फ संगीत से ही नहीं, बल्कि स्कूली शिक्षा से भी करीब का नाता है। लेकिन अगर आप इस बारे में किसी शिक्षक या छात्र से बात करें तो अभ्यास उनके लिए एक अरोचक भार है। यह गैरदिलचस्पी शायद इसलिए ज़्यादा है क्योंकि हम रियाज़ के विभिन्न पहलुओं को अपनाने की बजाय उसे एक बोरिंग ड्रिल की भाँति सम्बोधित करते हैं। कुछ शिक्षक तो छात्रों को अनुशासित करने के लिए रियाज़ की 'सज़ा' भी दे देते हैं। पर रियाज़ सज़ा नहीं बल्कि मज़ा है, और यह मज़ा उस्ताद ज़ाकिर हुसैन की मुस्कान में साफ झलकता है।

आप शायद रियाज़ का यह मज़ा आज भी उठाते हैं। यकीन न हो तो अपने अनुभव पर गौर करें। कोई भी ऐसा कार्य सोचें जिसमें आप माहिर हैं, जैसे क्रॉस्वर्ड या सुडोकू सुलझाना, शतरंज खेलना, कॉफी बनाना या फिर अपने फोन से सेल्फी खींचना। बार-बार रियाज़ करने से ही आप इन कार्यों में दक्ष बने हैं। आपने इन कार्यों को शायद रोज़ किया होगा, और जहाँ अरोचक तो दूर, आपको इनमें काफी मज़ा भी आया होगा। तो फिर रोज़ गणित की समस्याएँ सुलझाना या हिन्दी/अँग्रेज़ी में लेख लिखना इतना दूभर क्यों लगता है? यह सिर्फ शौक या रुचि की बात नहीं, इन गतिविधियों का रियाज़ भी स्कूली शिक्षा के अभ्यास से अलग नहीं है।

जिस तरह का रियाज़ हम शिक्षा में आम तौर पर करते आए हैं, उसे बदलना होगा। इसके लिए यहाँ पाँच सुझाव प्रस्तुत हैं।

पहला - विचारपूर्वक बदलाव

जी हाँ, अभ्यास यानी बुद्धिहीन दोहराव नहीं बल्कि गतिविधि को करने में हर बार थोड़ा बदलाव करना। जिस तरह आप सेल्फी खींचते वक्त अपने चेहरे के भाव तरह तरह से बदलते हैं या फोन को विभिन्न प्रकार से टेढ़ा और ऊँचा करते हैं, वही सोच शिक्षा के अभ्यास में भी लानी होगी। जब शिक्षक गणित का अभ्यास करवाएँ तो एक ही तरह के सवाल की बजाय थोड़ा परिवर्तन करके देखें कि क्या होता है। क्यों न एक सवाल सुलझाने के बाद, उसी सवाल को थोड़ा बदलकर इस तरह

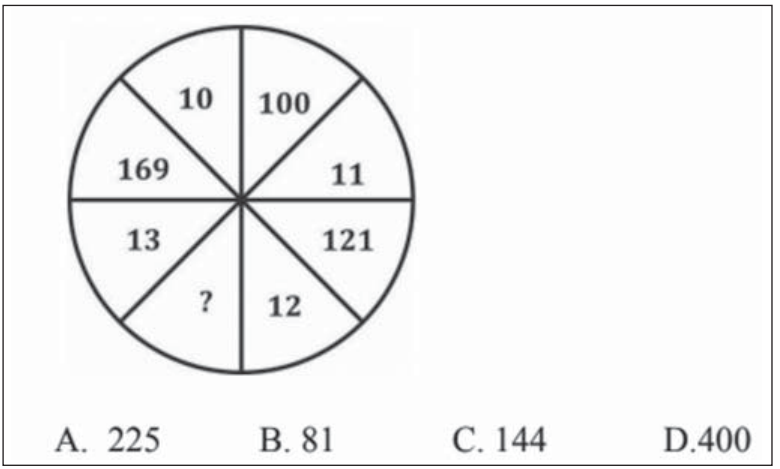

चित्र-1

घुमाएँ कि छात्र सोचने पर मजबूर हो जाएँ? राष्ट्रीय परख 2024 से एक प्रश्न का उदाहरण लेते हैं:

प्रश्न: दी गई आकृति (चित्र-1) में, संख्याओं को एक शृंखला के अनुसार लिखा गया है। लापता संख्या का पता लगाएँ।

इस प्रश्न पर चर्चा करने के बाद, जब छात्र विकल्प C का चयन करें, तो शिक्षक इस तरह के सवाल पूछ सकते हैं:

- यह शृंखला किस नियम के अनुसार बनाई गई प्रतीत होती है? अगर हम इसी आकृति में दो और भाग बनाएँगे, तो उन भागों में कौन-सी संख्याएँ आएँगी?
- अगर हमें ऐसी ही आकृति क्यूब शृंखला के अनुसार बनानी हो, तो हम किन संख्याओं को बदलेंगे?
- अब आप खुद सोचकर अपनी कॉपी में ऐसी ही एक आकृति बनाएँ और अन्य सब आपकी आकृति की शृंखला का नियम सोचकर बताएँ।

छात्रों को पाठ में से स्वयं सवाल बनाने का अभ्यास कराएँ, सिर्फ दिए हुए प्रश्नों का उत्तर बताने का अभ्यास नहीं। फिर यह देखें कि कौन कितना मुश्किल सवाल बनाता है।

इससे छात्रों की दिलचस्पी ही नहीं बल्कि रचनात्मक सोच भी बढ़ेगी। साथ ही, छात्रों के ज्ञान-स्तर का भी अचूक पता चलेगा और शिक्षक भी कुछ नया सीखेंगे। छात्रों की यह गलतफहमी भी दूर होगी कि गणित का मतलब है, सही जवाब पाते ही, अगले प्रश्न को सुलझाना।

दूसरा - प्रतिक्रिया या फीडबैक

रियाज़ के दौरान जल्द फीडबैक मिलना चाहिए कि आप सही दिशा में जा रहे हैं या नहीं। अगर रसायन विज्ञान की कक्षा हो तो देखें कि किस तरह कुछ चीज़ों का माप बदलते ही प्रयोग के परिणाम बदल जाते हैं। प्रतिक्रिया जितनी जल्दी मिले उतना ही बेहतर होगा। छात्र को उनके लेखन पर अगले दिन ही प्रतिक्रिया दें। छात्र भी एक-दूसरे को प्रतिक्रिया दे सकते हैं जिससे वे एक-दूसरे से काफी कुछ सीखेंगे। आपसी समीक्षा या reciprocal peer review जैसी तकनीक उपयोगी पाई गई है।

यदि छात्रों को एक हफ्ते बाद आपकी प्रतिक्रिया मिलती है, तो तब तक उनकी दिमागी गाड़ी अगले स्टेशन तक बढ़ चुकेगी और आपके द्वारा गहराई से दी गई प्रतिक्रिया को पढ़ना, उनके लिए एक औपचारिकता मात्र रह जाएगी।

तीसरा - गलती और अचरज

रियाज़ में अचरज का होना ज़रूरी है। और यह अचरज जब गलतियों से उभरे तो और भी बेहतर होता है। जैसे कि अगर आप बाँसुरी से कुछ सुर बजाने का अभ्यास कर रहे हों और अचानक एक मधुर संगीत बज

उठे, तो यह अचरज प्रेरणा और जिज्ञासा को जागरूक कर सकता है। इस गलती से कुछ अनपेक्षित सीख हासिल हो सकती है।

अचरज का शिक्षा में गहरा महत्व होता है। गणित में भी कुछ अभ्यास के सवाल ऐसे हों जिनके उत्तर अचरज भरे हों। जैसे अगर आप शतरंज के पहले खाने में एक चावल का दाना रखें और फिर हर अगले खाने में चावल के दानों को दुगना करते जाएँ तो आखिरी यानी 64वें खाने तक इतने चावल के दाने चाहिए होंगे जिससे भारत की भूमि चावल की 1 मीटर ऊँची परत से ढँक जाएगी। इस तरह का अचरज अभ्यास में लाएँ।

चौथा - जश्न

रियाज़ करना कई बार आसान नहीं होता क्योंकि उसमें सोच-शक्ति और दृढ़ निश्चय का ज़ोर लगता है। इसलिए रियाज़ करने के बाद खुद को शाबाशी दें कि आप और आपके छात्रों ने रियाज़ के लिए समय निकाला और अपने निश्चय को कायम रखा। इससे आपके दिमाग में रियाज़ के साथ सकारात्मक भावनाएँ जुड़ जाएँगी। हो सके तो अपने अभ्यास के अनुभव कहीं लिखें। इससे आपको अपनी प्रभुत्वता का एहसास जल्दी होगा। जैसे, छात्र अब 1 घण्टे में 600 शब्द की बजाय 750 शब्दों का लेख लिख सकते हैं। प्रगति को एक अन्दरूनी जश्न में तब्दील करें।

पाँचवाँ - साथ मिलकर सीखना

रियाज़ में अक्सर उस्ताद और शागिर्द शामिल होते हैं जिसमें शिद्दत के अलावा साथ मिलकर अभ्यास करने का बहुत महत्व होता है। उस्ताद और शागिर्द जब साथ में रियाज़ करते हैं तो इससे दोनों की कला निखरती है। इसी तरह रियाज़ छात्रों के साथ-साथ शिक्षक के लिए भी महत्व रखता है। कुछ लोग तो शिक्षण को एक अनन्त रियाज़ मानते हैं क्योंकि एक अच्छा शिक्षक हमेशा अपने अध्यापन के अभ्यास के ज़रिए सीखने का दिलचस्प खेल जारी रखता है, चाहे वह एक उस्ताद ही क्यों न हो। यदि शिक्षक और छात्र एकसाथ कुछ पुराने और नए सवालों को पूछने और सुलझाने का अभ्यास करेंगे तो असल मायनों में रचनात्मक अध्यापन और सीखना हो पाएगा।

* * *

जी हाँ, रियाज़ मज़ेदार हो सकता है, लेकिन तभी जब वह सही ढंग से व विचारपूर्वक किया जाए। जब छात्र बिना किसी दबाव के खुद से अभ्यास में भाग लेने लगते हैं तब विषयों पर उनकी पकड़ और उनका प्रभुत्व बहुत जल्द हो पाता है। यदि उन्होंने स्वेच्छा से रियाज़ को गले लगा लिया है तो प्रगति झक मारकर उनके पीछे दौड़ी आएगी। इसीलिए आप ज़ाकिर हुसैन और अल्ला रक्खा को रियाज़ करते समय मुस्कुराते हुए पाएँगे।

गोपाल मिड्ढा: पिछले 15 वर्षों से शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से जुड़े हैं। उन्होंने भारत एवं अमेरिका में शिक्षण नेतृत्व, अध्यापन, शिक्षक तैयारी और स्कूलों को कैसे बेहतर बनाया जाए, पर शोध किए हैं। आजकल वे शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर एक अनुसंधान केन्द्र 'शिक्षा - एक खोज' (www.shikshaekkhoj) स्थापित करने में जुटे हैं।

सभी चित्र: उर्वशी दुबे: बच्चों के लिए कल्पनाशील चित्र-पुस्तकें बनाने की अपनी प्रतिभा के लिए जानी जाती हैं। उनकी 18 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं, और कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। वे बचपन से ही चित्रांकन और चित्रण का अभ्यास कर रही हैं, जिसने उन्हें कला को करियर के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया। उनके अन्य कार्यों को जानने के लिए देखें: www.urvashidubey.com